



॥ श्री अपरा (अचला) एकादशी व्रत
कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री अपरा (अचला) एकादशी व्रत कथा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

अपरा (अचला) एकादशी का परिचय

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को अपरा एकादशी या अचला एकादशी कहा जाता है। "अपरा" का अर्थ है असीम अथवा अपरिमित, अर्थात् ऐसा व्रत जो असीम पुण्य प्रदान करे। पुराणों में वर्णित है कि इस एकादशी का श्रद्धापूर्वक पालन करने से अनेक तीर्थयात्राओं, यज्ञों और दानों के समान पुण्य प्राप्त होता है तथा भगवान श्री विष्णु की विशेष कृपा मिलती है।

युधिष्ठिर का प्रश्न

एक बार धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से विनम्रतापूर्वक पूछा—
"हे जनार्दन! ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?
उसका महात्म्य और व्रत का फल कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह अपरा अथवा अचला एकादशी है। यह महान पापों का भी नाश करने वाली तथा अनंत पुण्य प्रदान करने वाली है। इसके प्रभाव से मनुष्य के पाप नष्ट होकर उसे धर्म, यश और अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है।"

अपरा एकादशी का महात्म्य

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि—

जो व्यक्ति अपरा एकादशी का व्रत करता है, उसे निम्नलिखित महान कर्मों के समान पुण्य प्राप्त होता है—

कार्तिक मास में तीनों पवित्र नदियों में स्नान करने का पुण्य।

गया में पितरों का श्राद्ध और पिंडदान करने का फल।
प्रयागराज में माघ स्नान का पुण्य।
काशी में भगवान विश्वनाथ के दर्शन का फल।
बद्रीनाथ, केदारनाथ, पुष्कर, कुरुक्षेत्र तथा अन्य पवित्र तीर्थों की यात्रा का
पुण्य।
सूर्यग्रहण एवं चंद्रग्रहण के समय किए गए दान का फल।
गौदान, स्वर्णदान और अन्नदान जैसे महादानों का पुण्य।
भगवान ने आगे कहा कि यदि किसी मनुष्य से अज्ञानवश या मोहवश
कोई पाप हो गया हो और वह सच्चे मन से पश्चात्ताप करते हुए अपरा
एकादशी का व्रत करे, तो भगवान श्रीहरि की कृपा से उसके पाप क्षीण हो
जाते हैं और वह धर्ममार्ग पर अग्रसर होता है।

व्रत की प्रेरक कथा

प्राचीन समय में एक नगर में एक व्यक्ति रहता था जिसने जीवन में अनेक
अनुचित कर्म किए थे। समय के साथ उसे अपने कर्मों पर गहरा पश्चात्ताप
हुआ। उसने संतों से मार्गदर्शन माँगा। संतों ने उसे भगवान श्री विष्णु की
भक्ति तथा अपरा एकादशी का व्रत करने की सलाह दी।

उस व्यक्ति ने पूर्ण श्रद्धा, नियम और संयम के साथ एकादशी का व्रत
किया, भगवान श्रीहरि का नाम-जप किया, दान-पुण्य किया और अपने
जीवन में सदाचार अपनाया। भगवान विष्णु की कृपा से उसका जीवन
बदल गया। उसके मन की अशांति दूर हुई, वह धर्ममय जीवन जीने लगा
और अंत में उसे उत्तम गति प्राप्त हुई।

इस प्रकार यह एकादशी केवल पापों के क्षय का ही नहीं, बल्कि
आत्मशुद्धि, पश्चात्ताप और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का भी संदेश
देती है

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो मनुष्य श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक अपरा एकादशी का व्रत करता है, वह इस लोक में सुख, यश और समृद्धि प्राप्त करता है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम को प्राप्त होता है।"

अपरा (अचला) एकादशी का संदेश

अपरा एकादशी हमें यह शिक्षा देती है कि मनुष्य चाहे कितना भी बड़ा अपराधी या पापी क्यों न रहा हो, यदि वह सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करे, भगवान श्रीविष्णु की शरण ग्रहण करे और धर्म के मार्ग पर चले, तो उसका जीवन पुनः पवित्र और मंगलमय बन सकता है। ईश्वर की करुणा सदैव उस भक्त पर बरसती है जो सच्चे मन से उनकी भक्ति करता है।

व्रत का फल

शास्त्रों के अनुसार अपरा (अचला) एकादशी का व्रत करने से—

समस्त पापों का क्षय होता है।

तीर्थयात्राओं एवं महादानों के समान पुण्य प्राप्त होता है।

भगवान श्रीविष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

मन में शांति, सद्बुद्धि और धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

अंत में मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

॥ श्री अपरा (अचला) एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥